VIRTUE AND DUTY

जो कर्म उचित है, उसका पालन हमारा कर्तव्य है। जो अनुचित है, उसे नहीं करना भी कर्तव्य हो जाता है। उचित कर्म करना कर्तव्य और अनुचित कर्म करना अकर्तव्य है। जब हम अभ्यासपूर्वक कर्तव्यों का पालन करते हैं तब हममें जो नैतिक गुण उत्पन्न हो जाता है, उसे ही सद्गुण (virtue) कहा जाता है। उसी प्रकार जब हमें अकर्तव्यों अर्थात अनुचित कर्मों का अभ्यास हो जाता है तब हम दुर्गुण का अर्जन करते हैं। उचित कर्म कर्तव्य है और उचित कर्मों के अभ्यासपूर्वक करने से मनुष्य जिस गुण का अर्जन करता है, वह सद्गुण (virtue) है। इसलिए सद्गुण अर्जित करना अभ्यास है। अच्छे कर्मों के अभ्यास से अच्छे चरित्र का निर्माण होता है। अतः चरित्र की उत्कृष्टता सद्गुण है। चरित्र-दोष दुर्गुण है। कर्तव्य बाह्य कर्म का संकेत करता है। और सद्गुण आंतरिक चरित्र की ओर।

सद्गुण अशुभ क्रियाओं से मनुष्य को रोकता है। सद्गुण तो मनुष्य में तब आता है जब वह कर्तव्यों का अभ्यासपूर्वक पालन करता है और इसी से अच्छे चरित्र का निर्माण हो जाता है।

अतः जब अच्छे कर्मों का अभ्यास हो गया तब बुरे कर्म आकर्षित नहीं करते। इसलिए सद्गुण मनुष्य को उचित कर्मों के लिए प्रेरणा देता है।

सद्गुण जन्मजात नहीं है। यह प्राकृतिक प्रवृत्तियों से भिन्न है। अभ्यासपूर्वक उचित कर्म के करने से सद्गुण होता है। इसलिए यह अर्जित प्रवृत्ति है। यह प्राकृतिक प्रवृत्तियों के अपेक्षाकृत स्थायी होता है। प्राकृतिक प्रवृत्तियाँ चंचल और अस्थायी होती है।

सद्गुण से मनुष्य को आनंद की अनुभूति होती है। किसी कर्म में यदि इन्द्रियाँ तृप्त होती है तो क्षणिक सुख की अनुभूति होती है। पर अच्छे कर्मों से चिरस्थायी आनंद होता है। आनंद सद्गुण का संकेत है। सद्गुण की प्राप्ति, सद्गुण और दुर्गुण के भेद या उचित और अनुचित के भेद की चेतना होने पर ही होती है। पर यह भेद जान लेने के बाद उचित कर्मों को अनुचित को हटाकर अभ्यासपूर्वक करने से ही सद्गुण प्राप्त होता है। सही सद्गुण का यही है।

सभी सद्गुण एक-दूसरे से से संबद्ध हैं। वे पृथक नहीं हैं। सर्वोच्च शुभ प्राप्ति से ही सर्वोच्च सद्गुण प्राप्त होता है। अतः सर्वोच्च सद्गुण के अन्तर्गत सभी सद्गुण देश काल और व्यक्ति के द्वारा सम्पादित कार्यों पर निर्भर हैं।